

लुबा और चिड़िया

लेखक: पेट्रिसिआ

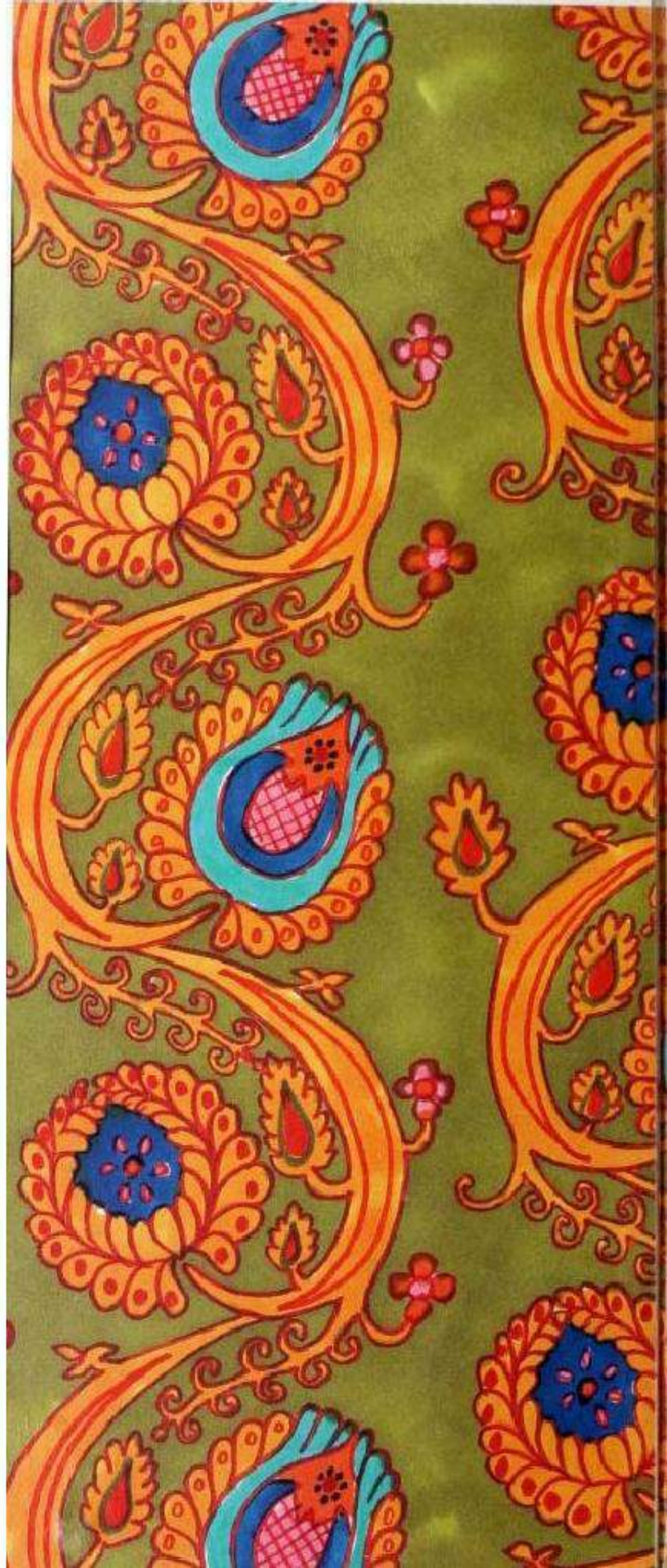
हिंदी अनुवादक: अशोक गुप्ता



प्रिय लुबा बड़े मजे से अपने माँ-बाप के साथ गांव की एक झोपड़ी में रह रही थी. फिर एक दिन उसने जाल में फंसी, डरी हुई एक चिड़िया की जान बचाई. उसने चिड़िया के साथ वैसी ही दया की जैसा कि वो किसी और के साथ भी करती. परन्तु जब चिड़िया ने लुबा के उपकार का बदला चुकाया तो उसकी जिंदगी ही बदल गई!

“मुझसे कुछ भी मांगो,” चिड़िया ने कहा. लुबा को तो कुछ नहीं चाहिये था लेकिन उसके माँ-बाप को बहुत कुछ चाहिये था - महल, बड़ी जमींदारी, उसके बाद रूस का साम्राज्य - फिर पूरी दुनियाँ की बागडोर! आखिर यह लालच का सिलसिला कब खत्म होगा!

इस खूबसूरत किताब में पेट्रिसिआ ने **मुछहारे और उसकी पत्नी** की रूसी कहानी को थोड़ा बदलकर एक नया रूप दिया है, जिसकी सादगी न केवल मन को छूती है बल्कि माँ-बाप की जिंदगी को भी बदल देती है.





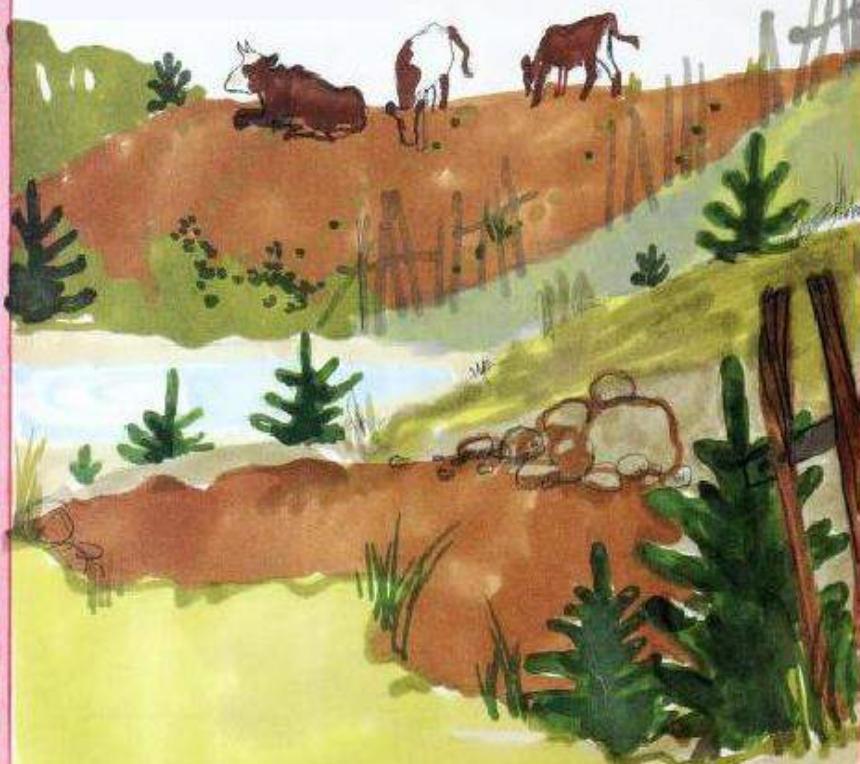
पेट्रिसिआ

लुबा और चिड़िया



बहुत पहले एक गरीब किसान और उसकी पत्नी घने जंगल के किनारे एक खुली जगह पर अपनी इकलौती संतान, लुबा के साथ झोपड़ी में रहते थे.

उनका घर बहुत छोटा था. बारिश में छत टपकती थी. चारदीवारी को भी मरम्मत की ज़रूरत थी. खेतों की देख-भाल तो ठीक थी, मगर खेत छोटे और बंजर थे. यूँ कहें तो उन्हें किसी तरह का आराम न था. परन्तु उनकी बेटी, लुबा, बड़ी प्यारी, मस्त, और बेफिक्र थी जैसा कि बच्चों को होना चाहिए.





एक दिन, लुबा जब घने जंगल में मशरूम तलाश रही थी, तभी उसे पेड़ के ऊपर से एक दुःख भरी आवाज सुनाई दी. उसने देखा एक नन्ही, प्यारी सी चिड़िया बहेलिये के जाल में फंसी थी. लुबा को चिड़िया पर दया आई और उसे छुड़ाने के लिये वो पेड़ पर चढ़ी. चिड़िया, मुक्त होकर मधुर गाना गाते हुए फुर से उड़ी और फिर वापस लुबा के पास वाली डाली पर आकर बैठ गयी. लुबा को बहुत आश्चर्य हुआ जब चिड़िया ने बोलना शुरू किया.

"प्यारी बहन, तुमने मेरी जान बचाई है. मैं तुम्हारे उपकार का बदला कैसे चुकाऊं?"

"नन्ही-मुन्नी चिड़िया, मैंने कोई विशेष उपकार नहीं किया है. ऐसा तो मैं किसी के लिए भी करती."

"तुम्हारे उपकार के लिये," चिड़िया बोली, "तुम मुझसे कोई भी चीज माँग सकती हो, मैं एक जादुई चिड़िया हूँ."

"पर मुझे तो कुछ भी नहीं चाहिये, मैं संतुष्ट हूँ." लुबा ने झिझककर मुस्कुराते हुए कहा.

"अगर तुम्हें कभी कुछ चाहिये हो, तो जंगल में आकर मुझे बुला लेना," चिड़िया बोली.







उसके बाद लुबा घर दौड़ी गई. वो धड़ाम से अंदर घुसी और उसने माँ-बाप को जादुई चिड़िया के बारे में सब कुछ बताया.

"बेवकूफ लड़की!" माँ ने दुःखी होते हुए कहा.

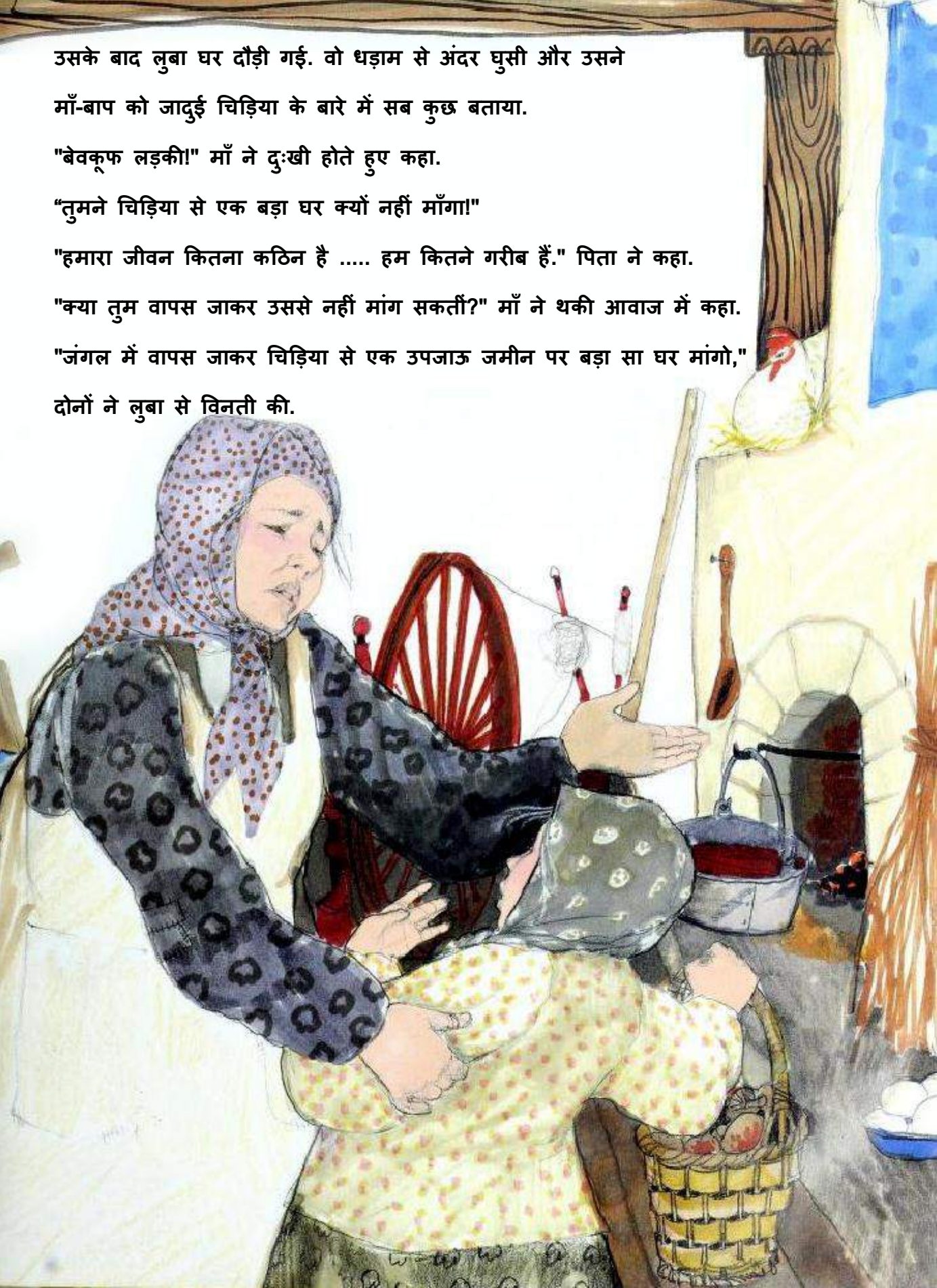
"तुमने चिड़िया से एक बड़ा घर क्यों नहीं माँगा!"

"हमारा जीवन कितना कठिन है हम कितने गरीब हैं." पिता ने कहा.

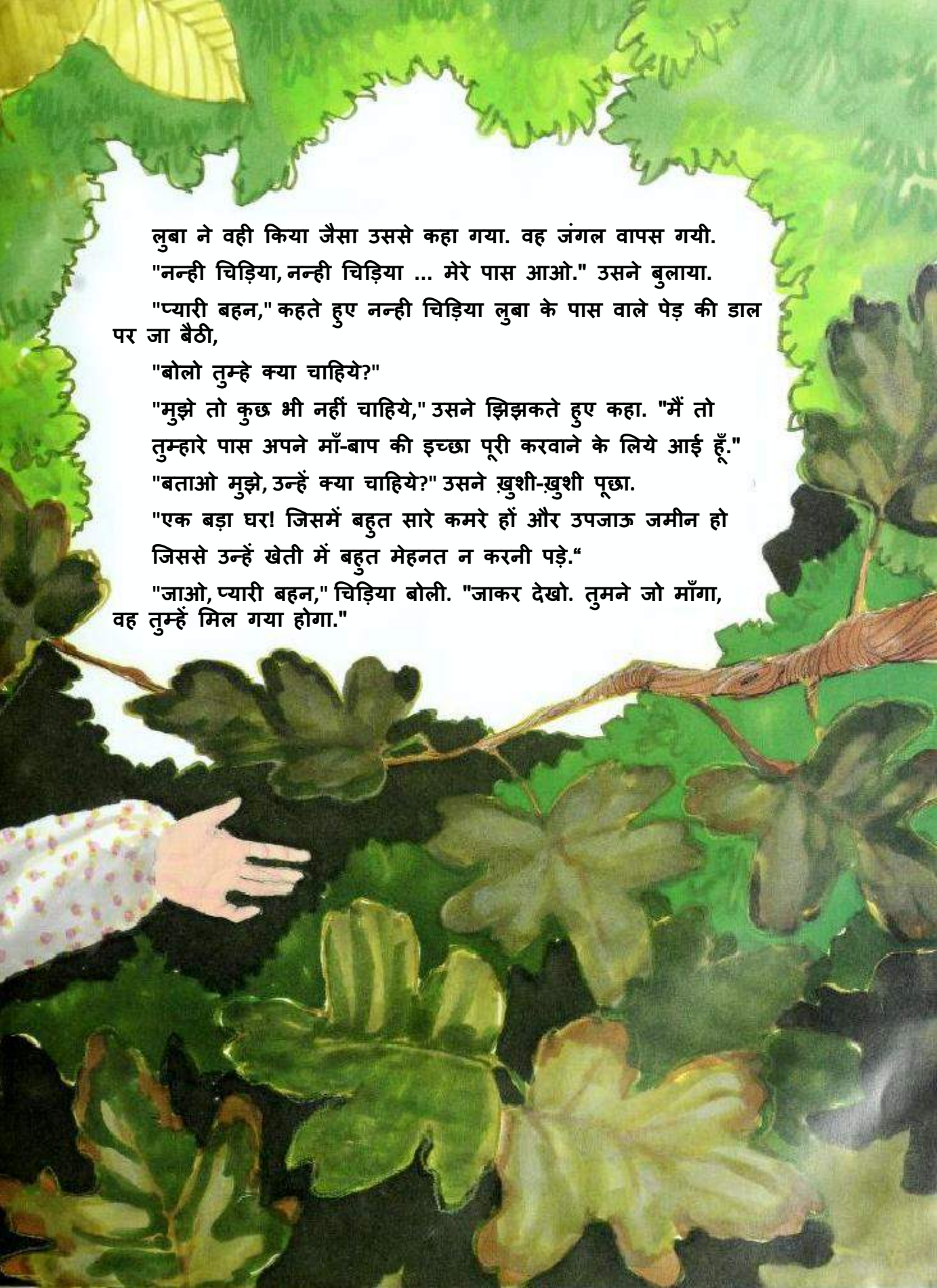
"क्या तुम वापस जाकर उससे नहीं मांग सकती?" माँ ने थकी आवाज में कहा.

"जंगल में वापस जाकर चिड़िया से एक उपजाऊ जमीन पर बड़ा सा घर मांगो,"

दोनों ने लुबा से विनती की.







लुबा ने वही किया जैसा उससे कहा गया. वह जंगल वापस गयी.
"नन्ही चिड़िया, नन्ही चिड़िया ... मेरे पास आओ." उसने बुलाया.
"प्यारी बहन," कहते हुए नन्ही चिड़िया लुबा के पास वाले पेड़ की डाल पर जा बैठी,

"बोलो तुम्हे क्या चाहिये?"

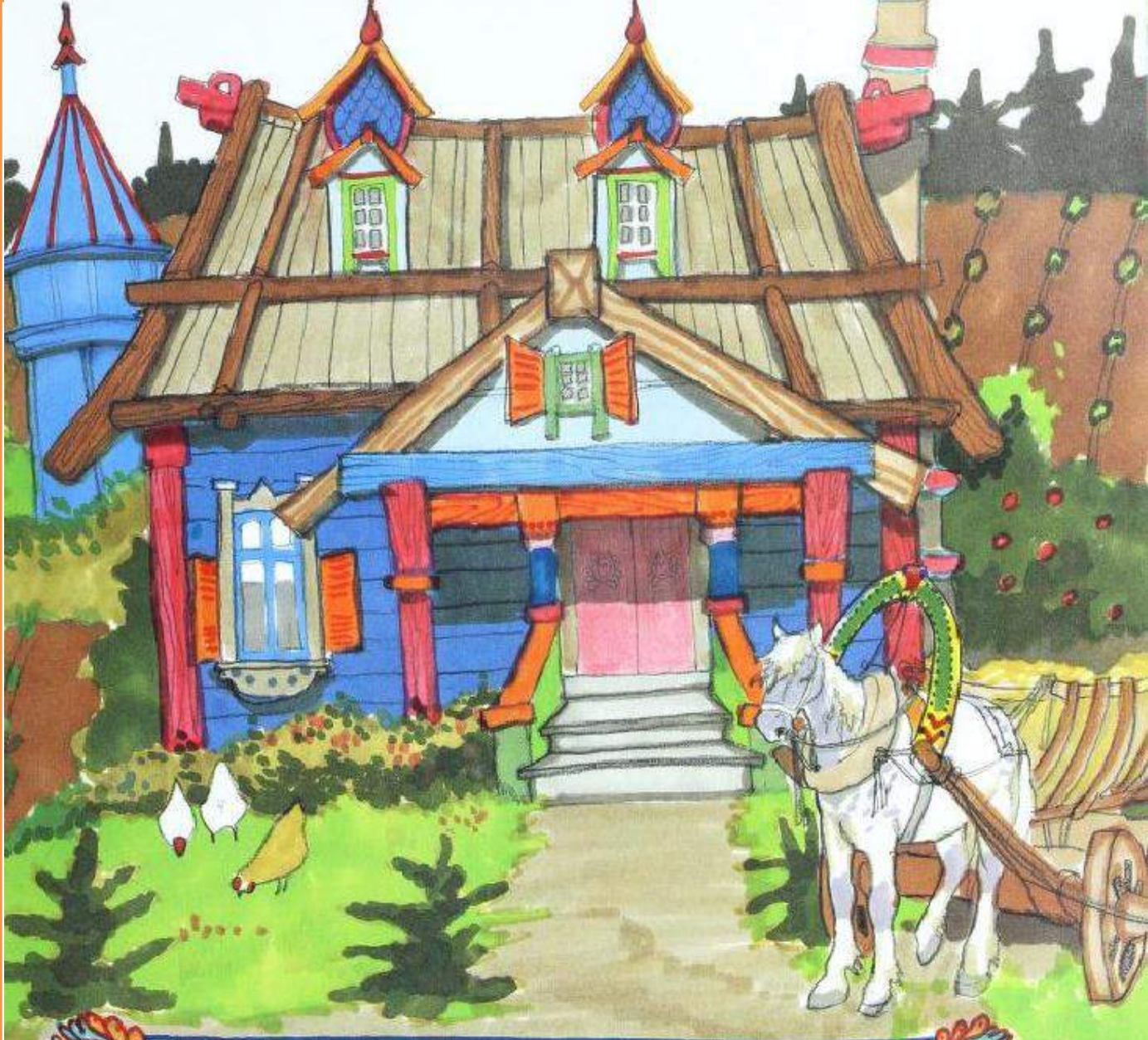
"मुझे तो कुछ भी नहीं चाहिये," उसने झिझकते हुए कहा. "मैं तो तुम्हारे पास अपने माँ-बाप की इच्छा पूरी करवाने के लिये आई हूँ."

"बताओ मुझे, उन्हें क्या चाहिये?" उसने खुशी-खुशी पूछा.

"एक बड़ा घर! जिसमें बहुत सारे कमरे हों और उपजाऊ जमीन हो जिससे उन्हें खेती में बहुत मेहनत न करनी पड़े."

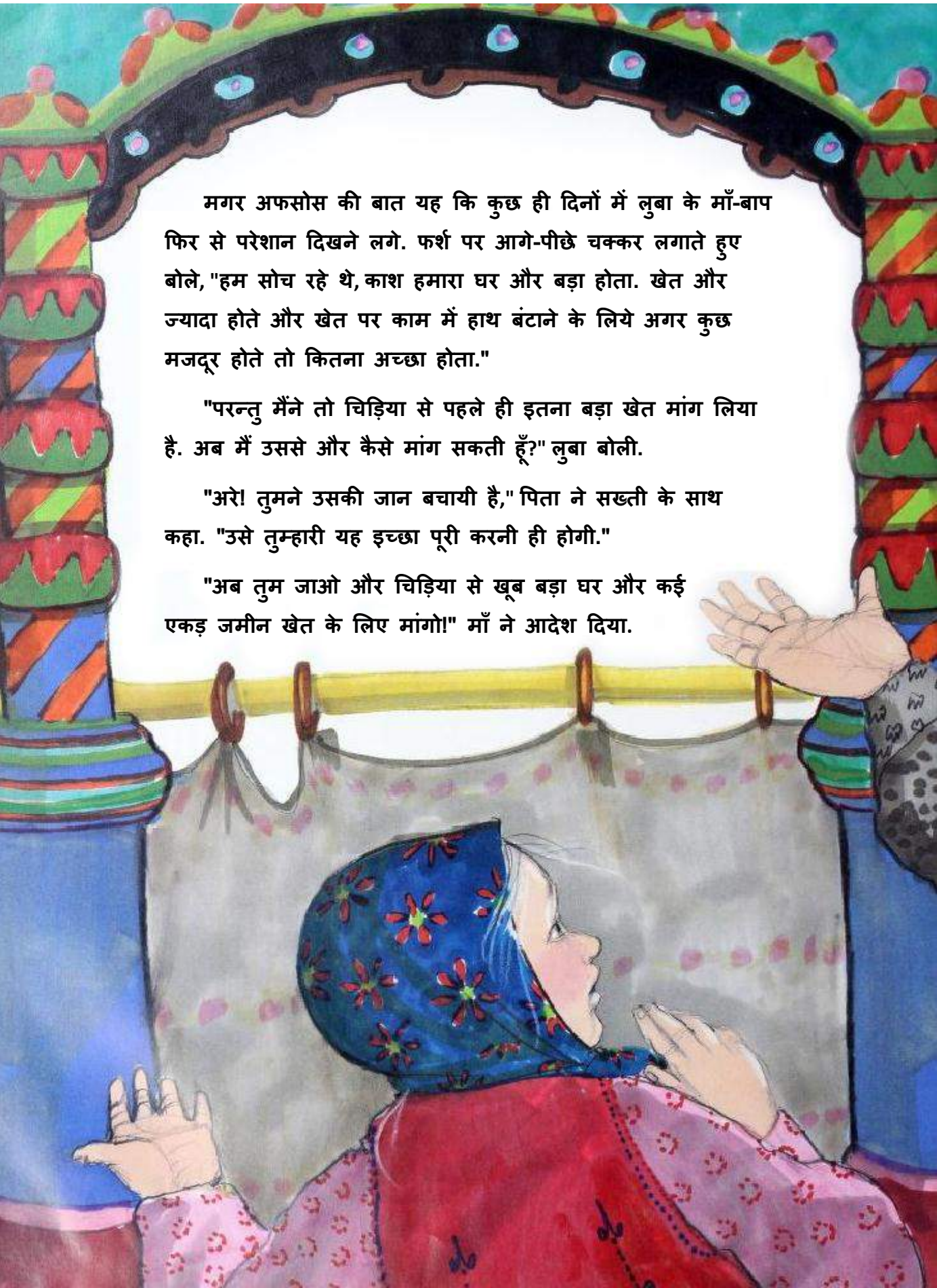
"जाओ, प्यारी बहन," चिड़िया बोली. "जाकर देखो. तुमने जो माँगा, वह तुम्हें मिल गया होगा."





सच में जब लुबा वहाँ पहुँची जहाँ उसकी झोपड़ी होती थी, तो उसे वहाँ एक बहुत बड़ा फार्म-हॉउस मिला. माँ-बाप ने उसका स्वागत किया. पैबंद वाले कपड़ों के बजाए वे नये कपड़े पहने थे. जमीन हरी-भरी और उपजाऊ लग रही थी. बाग, पके फलों के पेड़ों से लदे थे.

लुबा बहुत खुश थी. उसे पूरा भरोसा था अब उसके माँ-बाप भी बहुत खुश और संतुष्ट होंगे.



मगर अफसोस की बात यह कि कुछ ही दिनों में लुबा के माँ-बाप फिर से परेशान दिखने लगे. फर्श पर आगे-पीछे चक्कर लगाते हुए बोले, "हम सोच रहे थे, काश हमारा घर और बड़ा होता. खेत और ज्यादा होते और खेत पर काम में हाथ बंटाने के लिये अगर कुछ मजदूर होते तो कितना अच्छा होता."

"परन्तु मैंने तो चिड़िया से पहले ही इतना बड़ा खेत मांग लिया है. अब मैं उससे और कैसे मांग सकती हूँ?" लुबा बोली.

"अरे! तुमने उसकी जान बचायी है," पिता ने सख्ती के साथ कहा. "उसे तुम्हारी यह इच्छा पूरी करनी ही होगी."

"अब तुम जाओ और चिड़िया से खूब बड़ा घर और कई एकड़ जमीन खेत के लिए मांगो!" माँ ने आदेश दिया.

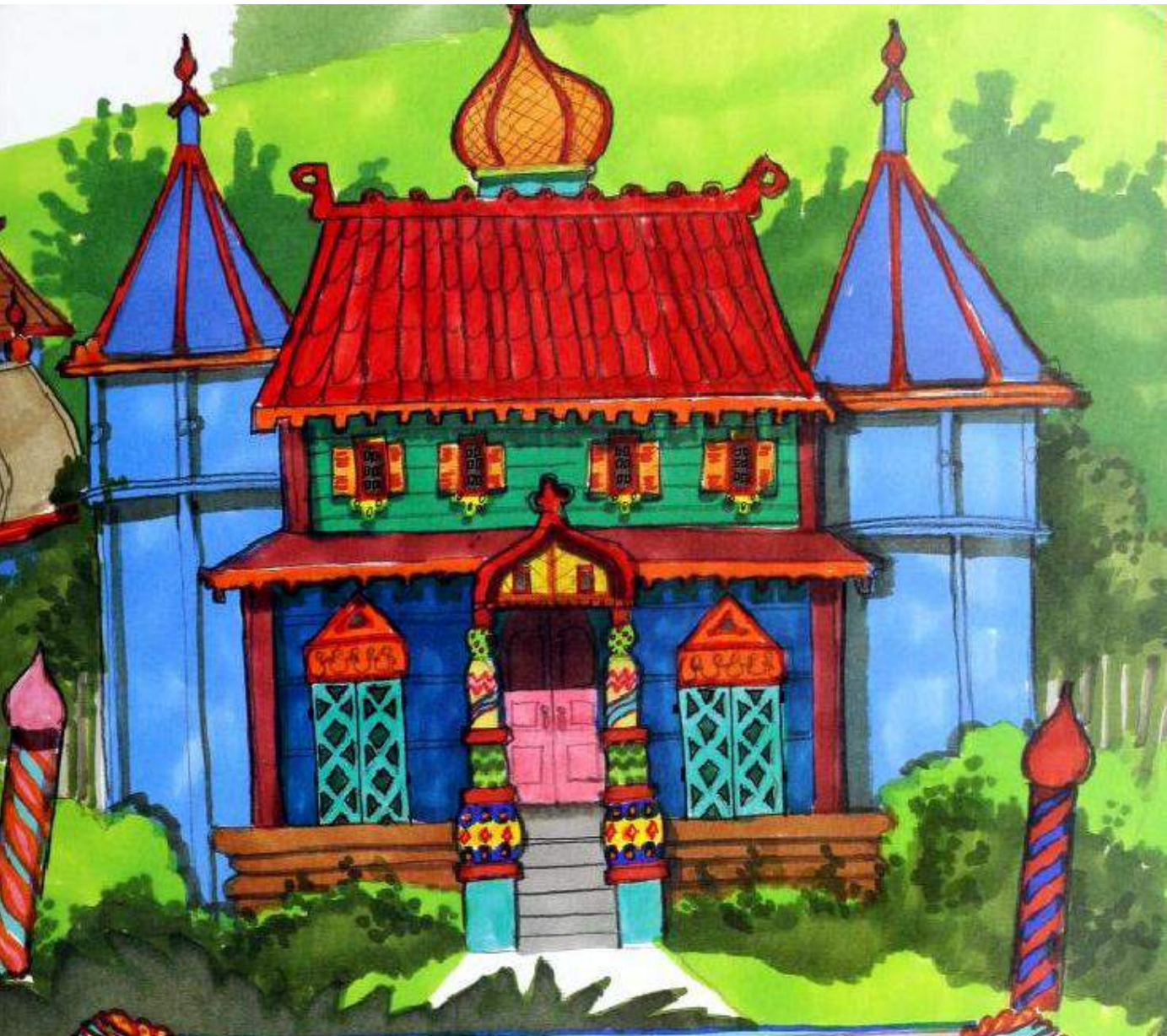




लुबा जंगल के किनारे पहुँची. वो चिड़िया को बुलाने में झिझक रही थी, पर चिड़िया लुबा की आवाज सुनते ही आ गयी.

"प्यारी बहन, अब क्या बात है?" चिड़िया ने पूछा.

"यह मेरे लिये नहीं है. मैं तुमसे कुछ और मांगने भी नहीं आती, ये मेरे माँ-बाप के लिए है. अब उन्हें फार्म-हॉउस अच्छा नहीं लग रहा है. उन्हें बड़ी हवेली, कई एकड़ जमीन और ढेरों नौकर चाहिये."



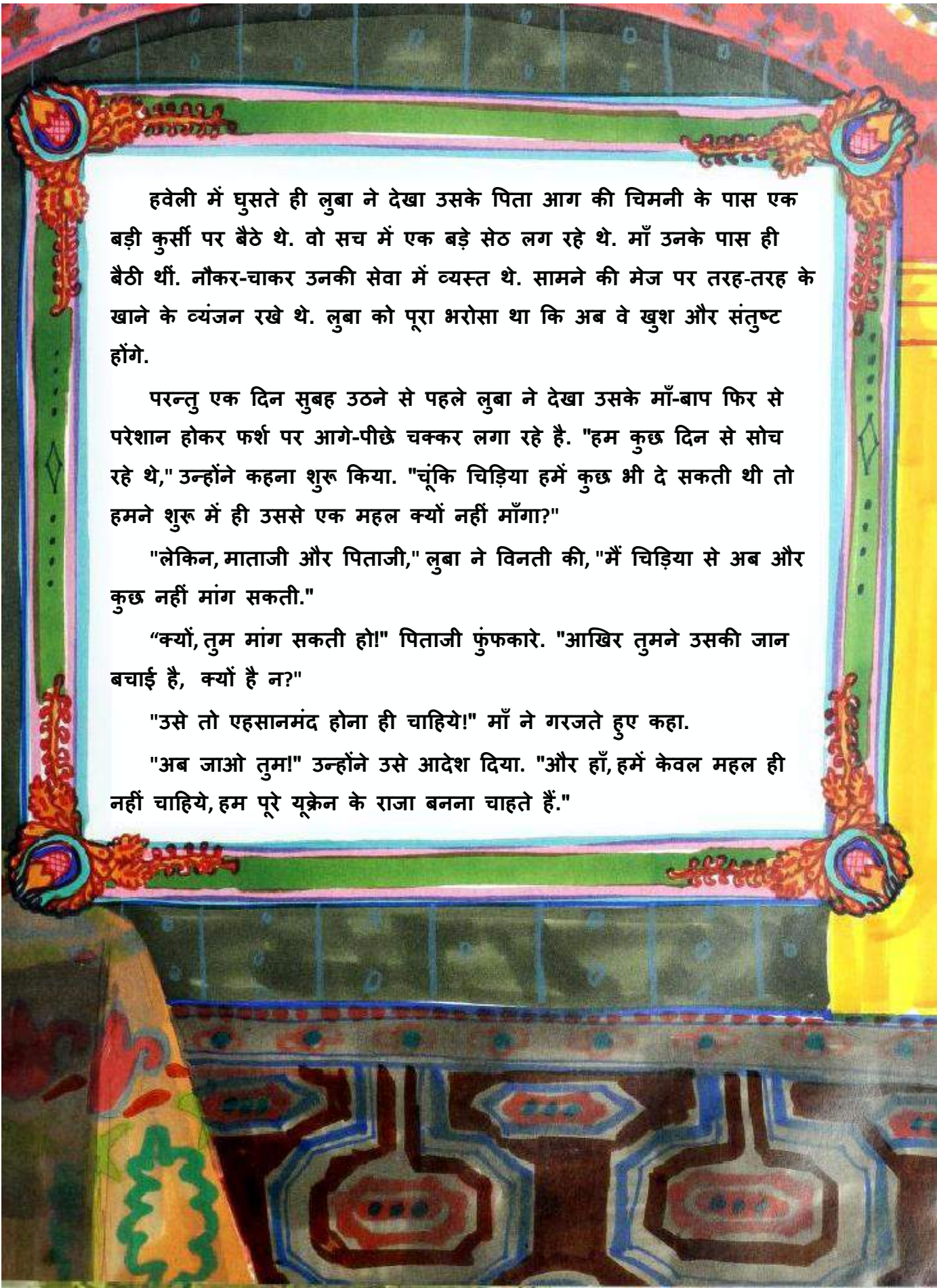
चिड़िया ने देखा कि लुबा बहुत शर्मिदा थी.

"अब तुम जा सकती हो मेरी प्यारी बहन," चिड़िया बोली.

"जो तुमने माँगा, वह पूरा हो चुका है."

जब लुबा वापस घर पहुँची तो उसे फार्म-हॉउस की जगह एक विशाल हवेली और उसके चारों तरफ बड़े बाग-बगीचे, तालाब, बत्तखें और हंस दिखाई दिये.



The illustration shows a room with a large window in the background. The window has a decorative frame with orange and blue patterns. The room is filled with light from the window. In the foreground, there is a large rug with a complex geometric pattern in shades of blue, red, and white. The walls are painted in a light green color. The overall style is that of a children's book illustration.

हवेली में घुसते ही लुबा ने देखा उसके पिता आग की चिमनी के पास एक बड़ी कुर्सी पर बैठे थे. वो सच में एक बड़े सेठ लग रहे थे. माँ उनके पास ही बैठी थीं. नौकर-चाकर उनकी सेवा में व्यस्त थे. सामने की मेज पर तरह-तरह के खाने के व्यंजन रखे थे. लुबा को पूरा भरोसा था कि अब वे खुश और संतुष्ट होंगे.

परन्तु एक दिन सुबह उठने से पहले लुबा ने देखा उसके माँ-बाप फिर से परेशान होकर फर्श पर आगे-पीछे चक्कर लगा रहे हैं. "हम कुछ दिन से सोच रहे थे," उन्होंने कहना शुरू किया. "चूँकि चिड़िया हमें कुछ भी दे सकती थी तो हमने शुरू में ही उससे एक महल क्यों नहीं माँगा?"

"लेकिन, माताजी और पिताजी," लुबा ने विनती की, "मैं चिड़िया से अब और कुछ नहीं मांग सकती."

"क्यों, तुम मांग सकती हो!" पिताजी फुंफकारे. "आखिर तुमने उसकी जान बचाई है, क्यों है न?"

"उसे तो एहसानमंद होना ही चाहिये!" माँ ने गरजते हुए कहा.

"अब जाओ तुम!" उन्होंने उसे आदेश दिया. "और हाँ, हमें केवल महल ही नहीं चाहिये, हम पूरे यूक्रेन के राजा बनना चाहते हैं."



लुबा भारी दिल से जंगल के किनारे की ओर चल दी. बादल छाये थे. अँधेरा हो रहा था. जंगल डरावना लग रहा था. लुबा ने चिड़िया को पुकारा. चिड़िया आयी.

"अब उन्हें क्या चाहिये?" चिड़िया ने कड़ाई से पूछा.

लुबा बड़ी मुश्किल से कह पायी, "अब वे चाहते हैं महल में रहना और पूरे यूक्रेन पर राज करना."

"ठीक है," चिड़िया बोली. "जाओ ऐसा ही होगा."







जब लुबा लौटकर आयी तो वह एक भव्य महल के आंगन में खड़ी थी. उसके चारों ओर वर्दी पहने नौकर और सिपाही थे. जब वो महल में घुसी उसने देखा उसके माँ-बाप के आगे-पीछे यूक्रेन के बड़े-बड़े रईस, ठाकुर, जिला-सचिव और उपसचिव खड़े थे. लुबा ने सोचा आखिर अब तो उसके माँ-बाप खुश होंगे!

और वे थे भी कम-से-कम कुछ समय तक. फिर एक दिन सुबह लुबा ने माँ-बाप को अपने पलंग के पास खड़े देखा.

"हम सोच रहे थे," उन्होंने कहा. "यूक्रेन का राजा होना, कोई इतनी बड़ी बात नहीं है जैसा हमने सोचा था. तुम चिड़िया के पास जाओ और उससे कहो वह हमें पूरे रूस का राजा और रानी बना दे!"

"मैं यह नहीं कर सकती!" लुबा रोते हुए बोली.

"तुम्हें करना ही पड़ेगा!" उन्होंने कहा. "आखिर हम यूक्रेन के शासक हैं और तुम हमारी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकती!"



जब लुबा जंगल पहुँची, चिड़िया उसका इंतजार कर रही थी।
आकाश में घने बादल छाये थे. बीच-बीच में बिजली भी चमक रही थी.

"अब उन्हें क्या चाहिये?" चिड़िया ने बेसब्री से पूछा.

लुबा ने सिसकते हुए कहा, "अब वो रूस के राजा-रानी बनना चाहते हैं."

"जाओ यह भी हो गया समझो." चिड़िया ने एक आंह भरते हुए कहा.

जैसे ही लुबा जंगल में खुली जगह पहुँची, उसे प्याज के आकार के सूरज में चमकते बड़े-बड़े गुम्बद नजर आये. फिर उसने अपने माँ-बाप को रूस के राजा-रानी के रूप में देखा. वे कल्पना से परे ढेरों आभूषणों से लदे एक सोने की बग्गी में चले आ रहे थे.

लुबा को पूरा विश्वास था, कि अब वे बहुत खुश और संतुष्ट होंगे.







और इस बार वे काफी समय तक सचमुच खुश भी रहे. फिर एक दिन लुबा ने देखा वे बड़े हॉल में आगे-पीछे चक्कर लगा रहे थे. जैसे ही लुबा उनके पास पहुंची, वे बोले, “आह, लुबा हम सोच रहे थे, अब जब हम रूस के राजा और रानी हैं, तो हमें ऐसा कोई कारण समझ नहीं आता कि हम पूरे विश्व के महाराजा और महारानी क्यों नहीं हो सकते!”

लुबा एकदम चुप्प पड़ गयी.

“तुम जाओ और चिड़िया से कहो वह इसे संभव करे, यह हमारा हुक्म है!” लुबा सोचने लगी - क्या वे सचमुच में उसके माँ-बाप थे? वो बेचारी मजबूर थी. उसने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया.



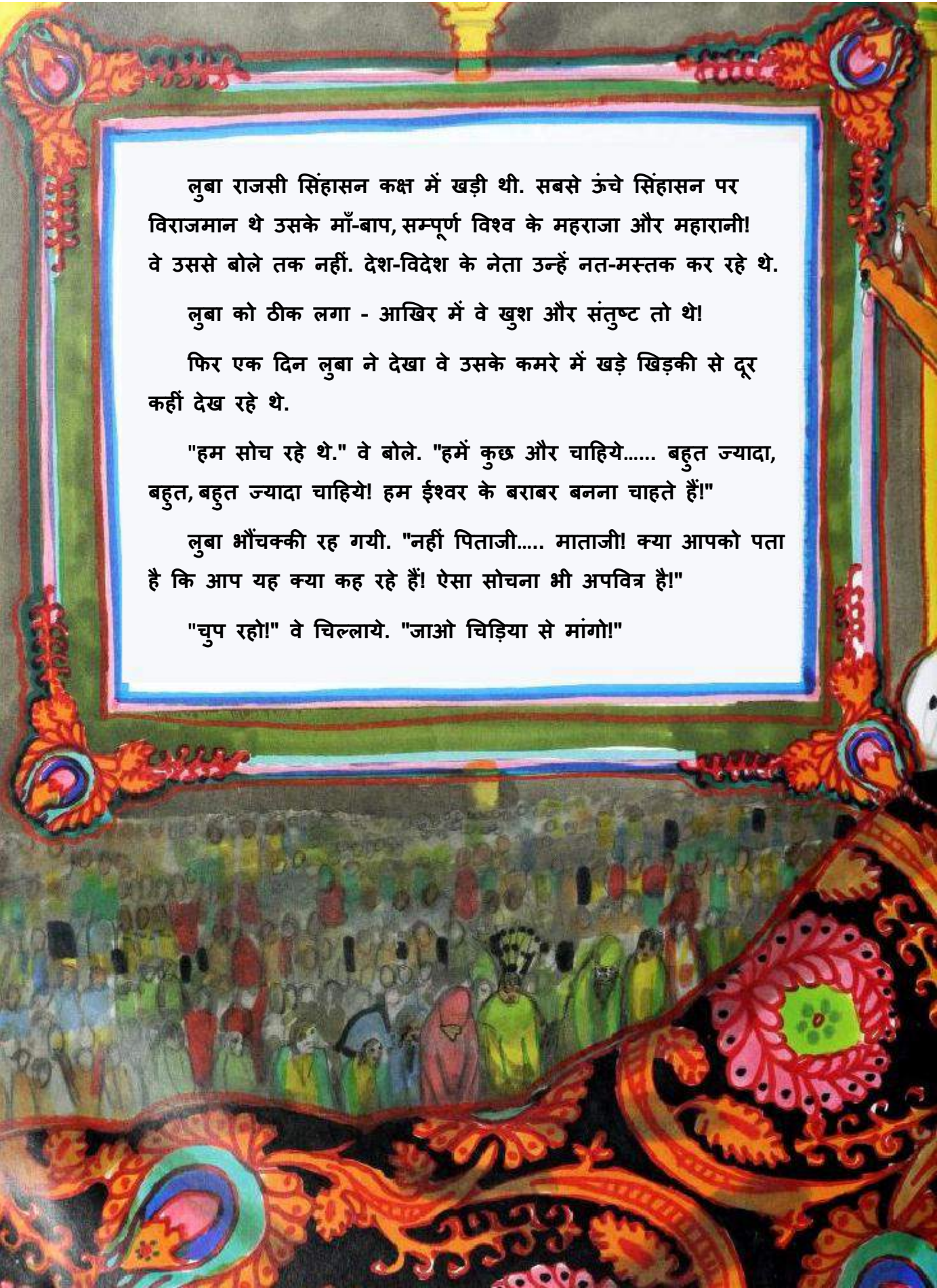
लुबा जब जंगल पहुँची तब आसमान स्याह काला था. पेड़ बुरी तरह झुककर एक दूसरे से लिपटे हुए थे. तूफानी बादल आसमान में गरजते हुए चले आ रहे थे. तेज हवा के कारण, लुबा मुश्किल से ही चल पा रही थी. चिड़िया उसका इंतजार कर रही थी.

"अब और क्या?" चिड़िया झपटकर बोली.

"अब वो सम्पूर्ण विश्व के महाराजा और महारानी बनना चाहते हैं!"

चिड़िया बोली, "जाओ, ऐसा ही होगा."





लुबा राजसी सिंहासन कक्ष में खड़ी थी. सबसे ऊंचे सिंहासन पर विराजमान थे उसके माँ-बाप, सम्पूर्ण विश्व के महाराजा और महारानी! वे उससे बोले तक नहीं. देश-विदेश के नेता उन्हें नत-मस्तक कर रहे थे.

लुबा को ठीक लगा - आखिर में वे खुश और संतुष्ट तो थे!

फिर एक दिन लुबा ने देखा वे उसके कमरे में खड़े खिड़की से दूर कहीं देख रहे थे.

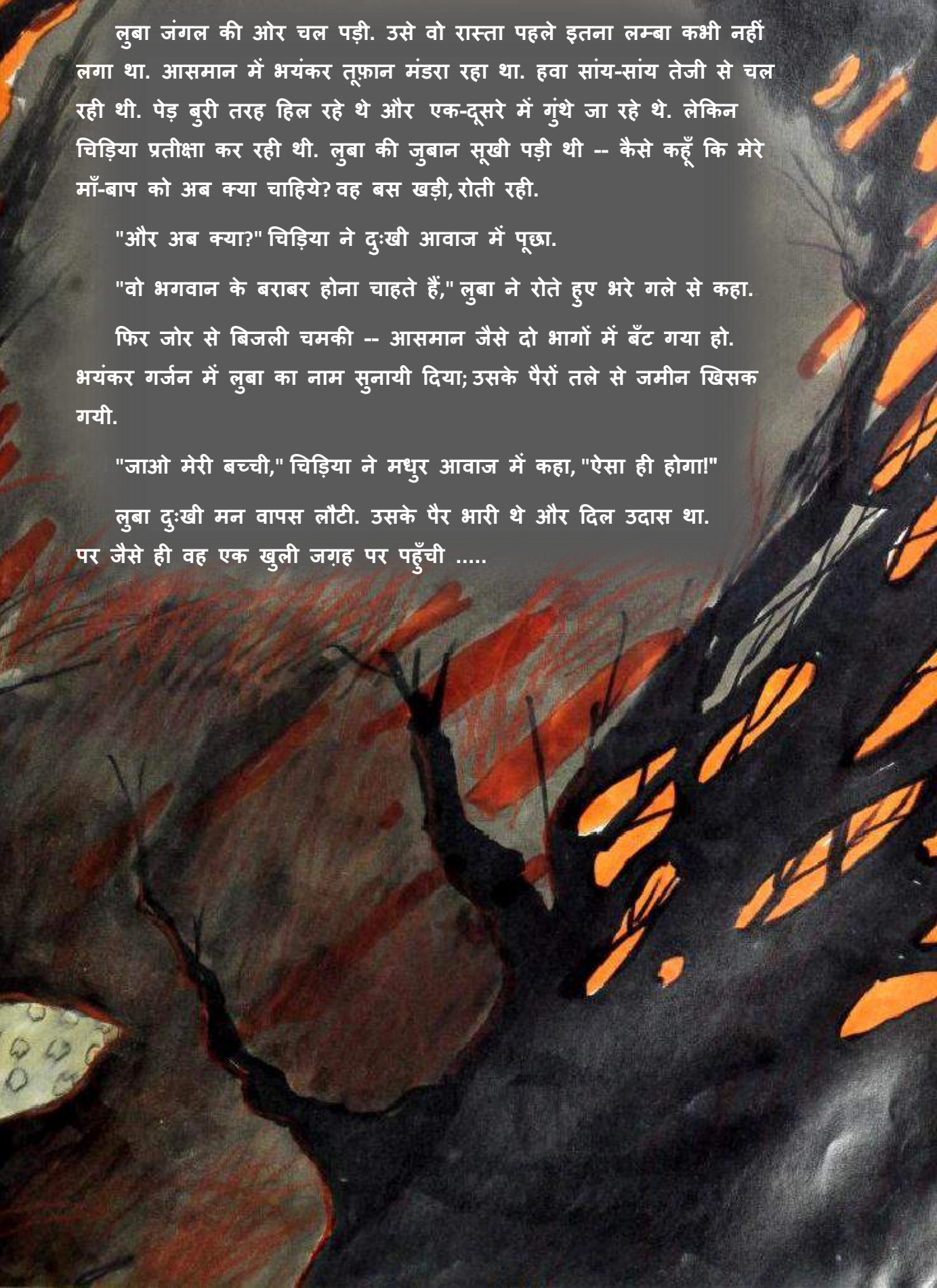
"हम सोच रहे थे." वे बोले. "हमें कुछ और चाहिये..... बहुत ज्यादा, बहुत, बहुत ज्यादा चाहिये! हम ईश्वर के बराबर बनना चाहते हैं!"

लुबा भौंचक्की रह गयी. "नहीं पिताजी..... माताजी! क्या आपको पता है कि आप यह क्या कह रहे हैं! ऐसा सोचना भी अपवित्र है!"

"चुप रहो!" वे चिल्लाये. "जाओ चिड़िया से मांगो!"







लुबा जंगल की ओर चल पड़ी. उसे वो रास्ता पहले इतना लम्बा कभी नहीं लगा था. आसमान में भयंकर तूफान मंडरा रहा था. हवा सांय-सांय तेजी से चल रही थी. पेड़ बुरी तरह हिल रहे थे और एक-दूसरे में गुंथे जा रहे थे. लेकिन चिड़िया प्रतीक्षा कर रही थी. लुबा की जुबान सूखी पड़ी थी -- कैसे कहूँ कि मेरे माँ-बाप को अब क्या चाहिये? वह बस खड़ी, रोती रही.

"और अब क्या?" चिड़िया ने दुःखी आवाज में पूछा.

"वो भगवान के बराबर होना चाहते हैं," लुबा ने रोते हुए भरे गले से कहा.

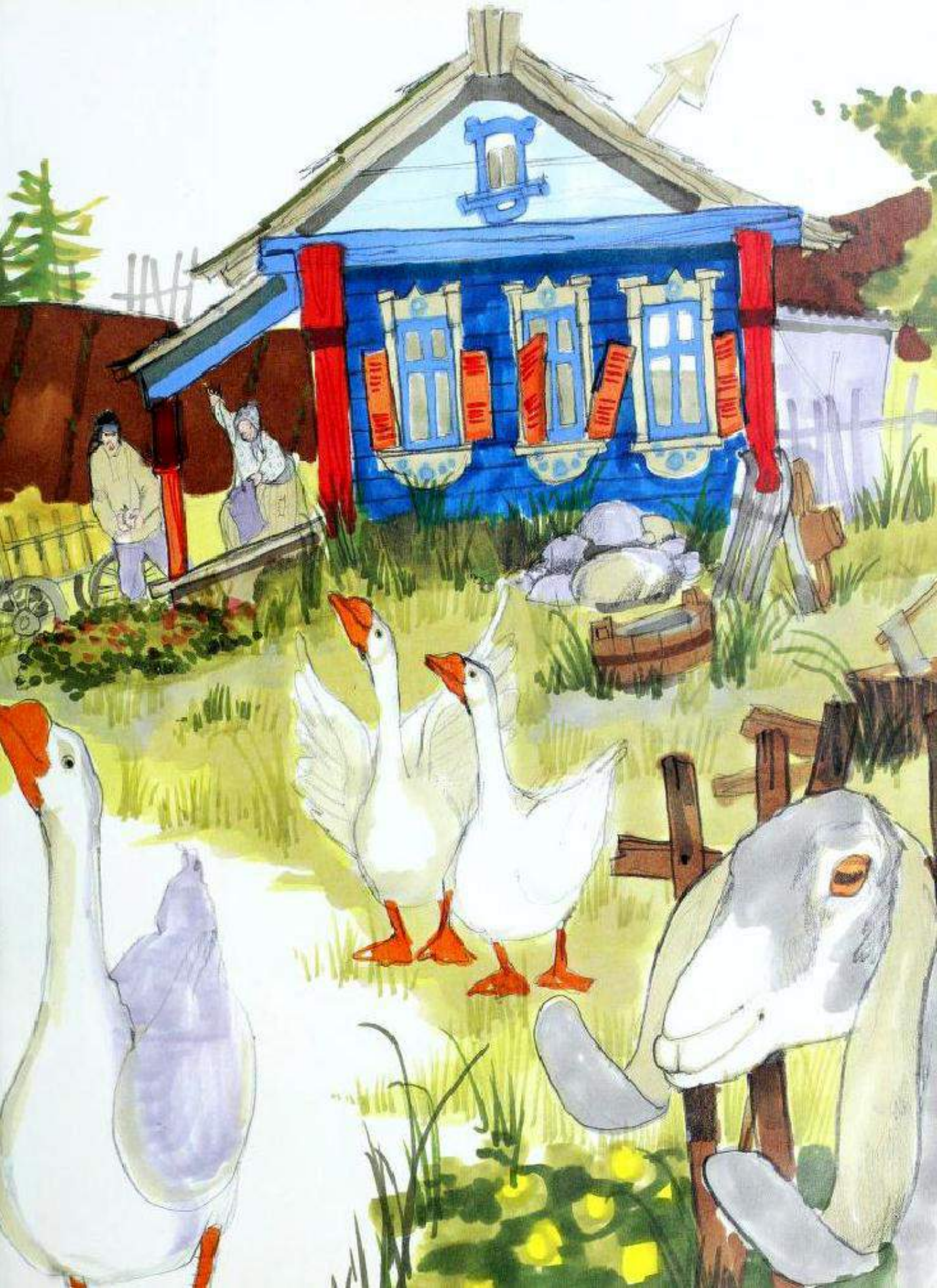
फिर जोर से बिजली चमकी -- आसमान जैसे दो भागों में बँट गया हो. भयंकर गर्जन में लुबा का नाम सुनायी दिया; उसके पैरों तले से जमीन खिसक गयी.

"जाओ मेरी बच्ची," चिड़िया ने मधुर आवाज में कहा, "ऐसा ही होगा!"

लुबा दुःखी मन वापस लौटी. उसके पैर भारी थे और दिल उदास था. पर जैसे ही वह एक खुली जगह पर पहुँची

...वो अपनी पुरानी छोटी सी झौपड़ी देख चकित रह गयी. उसका छोटा-सा प्यारा-सा घर बिल्कुल पहले जैसा था. चारदीवारी को मरम्मत की ज़रूरत थी; छत चू रही थी; छोटे से खेत सूखे पड़े थे.







उसने देखा माँ-बाप सामने के बरामदे में बैठे हुए थे. माँ फटे कपड़े ठीक कर रही थी. पिताजी लकड़ी के टुकड़े पर नक्काशी कर रहे थे.

“अब यही है हमारा प्यारा खजाना!” माँ ने खुशी से कहा.

“मैंने आज यह सिर्फ तुम्हारे लिये ही बनाया है,” पिता ने उसे लकड़ी की चिड़िया देते हुए कहा.

“आज तुमने जंगल में क्या मजा किया?” बांह फैलाकर लुबा का स्वागत करते हुए उन्होंने पूछा.

लुबा उनकी गोदी में स्नेह से लिपट गयी.

आखिर में उसके माँ-बाप खुश थे - वे वाकई में बहुत संतुष्ट थे.

